लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2, संख्या:3; जुलाई-दिसंबर, 2021

डॉ. लता अग्रवाल की कविताएँ

लौट आओ पापा

जानती हूँ
वक्त की फितरत नहीं
लौटना
न ही गया वक्त कभी
लौटकर आता है
दोबारा।
न लौटकर आया है कभी
संसार से जाने वाला
फिर भी गुजारिश है
एक बार
बस एक बार
लौट आओ पापा
मेरी खातिर।
चलना चाहती हूँ
आँगन की नर्म धूप में
चंद कदम आपके साथ
इस तपते रेगिस्तान में
चाहती हूँ
एक सायादार सरमाया
लौटना अवश्य
कि मैं
दिखलाना चाहती हूँ
कितना चली हूँ
आपके बताये रास्तों पर
पाए कितने शूल
कितने फूल
उन रास्तों पर
एक बार लौट आओ पापा।

स्त्री तुम बुद्ध नहीं बनी

स्त्री !
तुमने जन्म दिया
बुद्ध को
मगर तुम
बुद्ध नहीं बन पाई।
अनेक दायित्वों से
जूझती रही तमाम उम्र
छोड़कर चली क्यों नहीं गई
पुत्र और पति को
सोता छोड़कर
ब्रह्म ज्ञान की तलाश में
खोजने मुक्ति का मार्ग
क्योंकि तुम जानती थीं
मुक्ति मिले न मिले
एक बार त्याग देने से दहलीज
भविष्य में हर एक रास्ता
बन्द हो जाएगा
इस द्वार आने का।

आधी रात को यूं
खामोशी से जाना तुम्हारा
समाज को खल जाएगा
नहीं होगी प्रशंसा
न कहलाओगी पूज्य
मिलेगी उल्टे भर्त्सना
कोई नहीं सराहेगा
तुम्हारे इस ज्ञान-मार्ग को।
चरित्र की उजली चादर तुम्हारी
दागदार कर दी जाती
कल्पित, कलंकित रिश्तों की
कीचड़ तुम पर
उछाल दी जाती
बुद्ध तो नहीं हाँ, बुध्दू की
पदवी अवश्य पाती
इसलिए युग-युग से
स्त्री तुमने सीता बनना ही
स्वीकारा
कभी बुद्ध नहीं बन पाई।

संपर्क-सूत्र :
30, सीनियर एम आई जी, A सेक्टर
अप्सरा कॉम्प्लेक्स, इंद्रपुरी, भोपाल -462022